Surya Mandala Ashtakam (Gayatri Stavan)

Sanskrit Stotras along with their Hindi translation

Enclosed pages have been excerpted from the book:

Gayatri ka Mantrarth

by Pandit Shirram Sharma Acharya

Published by

The All World Gayatri Pariwar (awgp.org)

Sanskrit to Hindi Translation of the Gayatri Stavan - yanmandalam diptikaram vishalam ratnaprabham tivramanadirupam...

गायत्री मंत्रार्थ

मंगलाचरणम्

यन्मंडलं दीप्तिकरं विशालम्
रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम् ।
दारिद्र्य दुःखक्षयकारणं च,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥१॥

जिसका मण्डल प्रकाश देने वाला, विशाल रत्न प्रभा वाला, तेजस्वी तथा अनादि रूप है, जो दरिद्रता और दुःख को क्षय करने वाला है, वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मंडलं देवगणैः सुपूजितम्
विप्रैः स्तुतं मानवमुक्तिकोविदम् ।
तं देवदेवं प्रणमामि भर्गं,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥२॥

जिसका मण्डल देवगणों द्वारा पूजित है, मानवों को मुक्ति देने वाला है, विप्रगण जिसकी स्तुति करते हैं, उस देव सूर्य को प्रणाम करता हूँ, वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मंडलं ज्ञानघनंत्वगम्यं,
त्रैलोक्य पूज्यं त्रिगुणात्मरूपम् ।
समस्त तेजोमय दिव्य रूपं
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥३॥

जिसका मण्डल ज्ञान के घनत्व को जानता है, जो त्रय लोक द्वारा पूजित एवं प्रकृति स्वरूप है, तेज वाला एवं दिव्य रूप है । वह उपासनीय सविता मझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं गूढ़यति प्रबोधम्,
धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम् ।
तत् सर्वपापक्षय कारणं च,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥४॥

जिसका मण्डल गुप्त योनियों को प्रबोध रूप है, जो जनता के धर्म की वृद्धि करता है, जो समस्त पापों के क्षय का कारणीभूत है वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं व्याधि विनाशदक्षम्,
यदृग् यजुः सामसु सम्प्रगीतम् ।
प्रकाशितं येन च भूर्भुवः स्वः,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥५॥

जिसका मण्डल रोगों को नष्ट करने में दक्ष है, जिसका वर्णन ऋक्, यजु और साम में हुआ है, जो पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा स्वर्ग तक प्रकाशित है वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति,
गायन्ति यच्चारण सिद्धसङ्घाः ।
यद्योगिनो योगजुषां च सङ्घाः,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥६॥

वेदज्ञ जिसके मण्डल का वर्णन करते हैं, जिसका गान चारण तथा सिद्धगण करते हैं, योग युक्त योगी लोग जिसका ध्यान करते हैं, वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं सर्व जनेषु पूजितं,
ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके ।
यत्काल कालादिमनादि रूपम्,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥७॥

जिसके मण्डल का पूजन सब लोग करते हैं, मृत्युलोक में जो प्रकाश फैलाता है, जो काल का भी काल रूप है, अनादि है वह उपासनीय सूर्य मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं विष्णुचतुर्मुखास्यं,
यदक्षरं पापहरं जनानाम् ।
यत्कालकल्पक्षयकारणं च,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥८॥

ज़िसका मण्डल विष्णु तथा ब्रह्मस्वरूप है, जो अक्षर है और जनों का पाप नष्ट करता है, जो काल को भी नष्ट करने में समर्थ है, वह उपसनीय सूर्य मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं विश्वसृजां प्रसिद्धं,
उत्पत्तिरक्षा प्रलय प्रगल्भम् ।
यस्मिन् जगत् संहरतेऽखिलं च,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥९॥

जिसके मण्डल द्वारा विश्व का सृजन हुआ है, जो उत्पत्ति, रक्षा तथा संहार करने में समर्थ है, जिसमें यह समस्त जगत् लीन हो जाता है, वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोः,
आत्मा परं धाम विशुद्धतत्वम् ।
सूक्ष्मातिसूक्ष्मयोगपथानुगम्यं,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥१०॥

जिसका मण्डल सर्व व्यापक विष्णु का स्वरूप है, जो आत्मा का परम धाम है और जो विशुद्ध तत्व है, योग पथ से सूक्ष्म से सूक्ष्म भेद को भी जानता है, वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं ब्रह्मविदो वदन्ति,
गायन्ति यच्चारण सिद्धसंघाः ।
यन्मण्डलं वेदविदः स्मरन्ति,
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥११॥

जिसके मण्डल का वर्णन ब्रह्मज्ञ करते हैं, जिसका यशोगान चारण और सिद्ध गण करते हैं, जिसकी महिमा का वेदविद् स्मरण करते हैं, वह उपासनीय सविता मुझे पवित्र करे ।

यन्मण्डलं वेद विदोपगीतं,
यद्योगिनां योगपथानुगम्यम् ।
तत्सर्ववेदं प्रणमामि दिव्यं
पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥ १२॥

जिसके मण्डल का वर्णन वेदविद् करते हैं, योग–पथ का अनुसरण करके योगी लोग जिसे मानते हैं, उस सूर्य को प्रणाम है, वह उपासनीय सविता हमको पवित्र करे ।

उपरोक्त प्रार्थना में भगवान सविता की वन्दना है । सावित्री भी सविता की शक्ति है । गायत्री मन्त्र में भगवान का पुल्लिंग शब्दों से अभिवन्दन किया है, माता की स्त्री लिंग शब्दों में उपासना की जाती है । यह लिंग भेद कई व्यक्तियों को भ्रम में डालता है । वस्तुतः सविता और सावित्री, ईश्वर और ब्रह्म एक ही हैं । वह न स्त्री है, न पुरुष, या वह दोनों ही हैं, स्त्री भी और पुरुष भी । जब हम माता के रिश्ते में प्रभु की उपासना करते हैं तो वह गायत्री आराधना कहलाती है ।

गायत्री शब्द का अर्थ

ऐतरेय ब्राह्मण में गायत्री शब्द का अर्थ करते हुए कहा गया है–

''गयान् प्राणान् त्रायते सा गायत्री ।''

अर्थात्–जो गय (प्राणों की) रक्षा करती है, वह गायत्री है । गति, क्रिया, विचार शक्ति, विवेक एवं जीवन धारण करने वाला तत्व है, वह प्राण कहलाता है । इस प्राण के कारण हम जीवित हैं । जब प्राण निकल गया तो जीवन का अन्त ही समझिए, प्राण रहित देह से कुछ प्रयोजन नहीं सधता । उसे तो नष्ट कर देना ही हितकर समझा जाता है । इसलिए उसे गाढ़ या जला देते हैं । प्राण होने के कारण जीव को प्राणी कहते हैं, बिना प्राण का पदार्थ तो जड़ होता है । जब किसी प्राणी का प्राण निर्बल पड़ जाता है तो उसका बाह्य शरीर ठीक दिखाई देते हुए भी वह भीतर ही भीतर खोखला हो जाता है । कई